



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)  
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 304]

No. 304]

नई दिल्ली, मंगलवार, जून 1, 1999/ज्येष्ठ 11, 1921  
NEW DELHI, TUESDAY, JUNE 1, 1999/JYAISTHA 11, 1921

वित्त मंत्रालय

आर्थिक कार्य विभाग

( बैंकिंग प्रभाग )

अधिसूचना

नई दिल्ली, 1 जून, 1999

का. आ. 406 ( अ ).—केन्द्रीय सरकार ने, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 ( 1949 का 10 ) की धारा 45 की उपधारा ( 1 ) के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा आवेदन करने पर उक्त धारा की उपधारा ( 2 ) के अधीन बरेली कारपोरेशन बैंक लिमिटेड, बरेली, उत्तर प्रदेश की बाबत अधिस्थगन आदेश किया है;

और भारतीय रिजर्व बैंक ने ऐसे अधिस्थगन की अवधि के दौरान यह समाधान हो जाने पर कि लोक हित और निक्षेपकर्ताओं के हित में ऐसा करना आवश्यक है, उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा ( 4 ) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए बरेली कारपोरेशन बैंक लिमिटेड को बैंक ऑफ बड़ौदा में समापन करने के लिए एक स्कीम तैयार की है;

और भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त धारा की उपधारा ( 6 ) के उपबंधों के अनुसार संबंधित बैंकों को उक्त स्कीम का प्रारूप भेजने के पश्चात् और उक्त स्कीम की बाबत प्राप्त सुझावों और आक्षेपों पर विचार करने के पश्चात् उक्त स्कीम को मंजूरी के लिए केन्द्रीय सरकार को भेज दिया है;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा ( 7 ) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इसमें इसके पश्चात् उल्लिखित विषयों और शर्तों पर और उनके अधीन रहते हुए, निम्नलिखित स्कीम को मंजूरी देती है।

अध्याय 1

प्रारम्भिक

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ—( 1 ) इस स्कीम का संक्षिप्त नाम बरेली कारपोरेशन बैंक लिमिटेड ( बैंक ऑफ बड़ौदा के साथ समापन ) स्कीम, 1999 है।

( 2 ) यह उस तारीख को प्रवृत्त होगी जिसे केन्द्रीय सरकार, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट करे।

2. परिभाषाएँ—इस स्कीम में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

( 1 ) "अधिनियम" से बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 ( 1949 का 10 ) अभिप्रेत है;

( 2 ) "आसि खाता" से वह काल्पनिक खाता अभिप्रेत है जो स्कीम में यथा उपबन्धित अंतरक बैंक की समय-समय पर दायित्वों को समायोजित करने के पश्चात् अधिशेष अथवा कमी का पता लगाने के लिए स्कीम के पैरा 5 के उप पैरा ( 2 ) के अनुसरण में खोला गया हो;

- (3) "संग्रहण खाता" से वह काल्पनिक खाता अभिप्रेत है जो आस्तियों और दायित्वों के समायोजन के पश्चात् अंतरक बैंक के सदस्यों को वितरण के लिए उपलब्ध होने वाली रकम, यदि कोई हो, का पता लगाने के प्रयोजन के लिए स्कीम के पैरा 7 के अनुसरण में खोला गया हो;
- (4) "विहित तारीख" से वह तारीख अभिप्रेत है जो केन्द्रीय सरकार पैरा 1 के उप पैरा (2) के अधीन विनिर्दिष्ट करे;
- (5) "स्कीम" से बरेली कारपोरेशन बैंक लिमिटेड (बैंक ऑफ बड़ौदा के साथ समामेलन) स्कीम, 1999 अभिप्रेत है;
- (6) "अंतरक बैंक" से बरेली कारपोरेशन बैंक लिमिटेड अभिप्रेत है, जो एक बैंककारी कम्पनी है और जिसका रजिस्ट्रीकृत कार्यालय बी सी वी भवन, 126, सिविल लाइन्स, बरेली, उत्तर प्रदेश में स्थित है;
- (7) "अन्तरिती बैंक" से बैंक ऑफ बड़ौदा अभिप्रेत है, जो बैंककारी कम्पनी (उपक्रमों का अर्जन और अन्तरण) अधिनियम, 1970 (1970 का 5) की धारा 3 के अधीन गठित तत्स्थानी नया बैंक है;
- (8) उन शब्दों और पदों के, जो इसमें प्रयुक्त हैं, और परिभाषित नहीं हैं, किन्तु अधिनियम में परिभाषित हैं, वही अर्थ होंगे जो उस अधिनियम में हैं।

## अध्याय 2

### कारबार संपत्तियों, आस्तियों और दायित्वों का अन्तरण

#### 3. आस्तियों और दायित्वों का अन्तरण और उनका साधारण प्रभाव :—

- (1) विहित तारीख से अंतरक बैंक के सभी अधिकार शक्तियाँ, दावे, मांगें, हित प्राधिकार, विशेषाधिकार, फायदे, आस्तियाँ और परिसंपत्तियाँ, जंगम और म्थावर जिसमें स्थान सम्मिलित है जो भूवृत्ति की सभी अनुपंगियों और जिसे पट्टे करार के अंतर्गत उन्हें धारित किया गया है, उसमें निहित किराये की रकम तथा अन्य रकम औचित्यों के अधीन है तथा कार्यालय का सभी फर्नीचर, खुले रखे गए उपस्कर, संयंत्र, साधित्र और साधन, बहियाँ, कागज लेखन सामग्री का भंडार, अन्य भंडार और भंडारण स्टॉक, अंशों (शेयरों) और प्रतिभूतियों, हाथ में प्राप्य और संव्यवहार में सभी विल, हाथ में सभी नकदी और चालू अथवा निक्षेप खाते (जिसमें मांग पर या संक्षिप्त सूचना कर धन सम्मिलित है) में समस्त नकदी, जिसमें बैंक का सोना चांदी सभी बहियाँ, ऋण, बंधक ऋण प्रतिभूति के फायदे सहित अन्य ऋण और इसकी कोई गारंटी, यदि कोई हो, संपत्ति अधिकार और आस्तियाँ, यदि कोई हो, अंतरक बैंक के कारबार के संबंध में सभी गारंटियाँ इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन अन्तरिती मानी जाएंगी तथा वे उसकी संपत्तियाँ और आस्तियाँ होंगी और निर्धारित तारीख से ही अंतरक बैंक के सभी दायित्व शुल्क और उन्मोचन, यहां दी गई और अन्तरिती बैंक के दायित्व शुल्क और बाध्यताएं होंगी।
- (2) पूर्वगामी की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना सभी संविदाएं विलेख, बंधपत्र, करार, मुख्तारनामें (पावर ऑफ अटॉर्नी) विधि प्रतिनिधित्व की मंजूरियाँ तथा अन्य लिखित, वे किसी भी स्वरूप के हों अथवा नियत तारीख से तुरन्त पहले प्रभावी हों, आगे बताई गई सीमा तक और ढंग से अन्तरिती बैंक के विरुद्ध या पक्ष में प्रभावी होंगे और उन पर इस तरह कार्यवाहियों की जाएंगी, मानो कि अन्तरक बैंक के वजाय अन्तरिती बैंक उसका एक पक्षकार हो अथवा मानो कि वे अन्तरिती बैंक के पक्ष में जारी किए गए हों।
- (3) यदि विहित तारीख को कोई याद, अपील अथवा किसी भी तरह की कोई अन्य विधिक प्रक्रिया अन्तरक बैंक के द्वारा या विरुद्ध लम्बित है तो उसे उपशामित या रोक नहीं जाएगा या उसका किसी रूप में प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा किन्तु यह इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए अन्तरिती बैंक द्वारा या उसके विरुद्ध अभियोजित की जाएगी और प्रवृत्त बनी रहेगी।

(4) यदि भारत के बाहर किसी देश की विधि के अनुसार इस स्कीम के उपबंध उसे देश में स्थित किसी आस्ति या दायित्वों जो अंतरक बैंक के अन्तरिती बैंक के उपक्रम का भाग है, के अन्तरण अथवा उसको निहित करने के लिए स्वयं प्रभाव में हो तो अन्तरिती बैंक का मुख्य कार्यवाहक अधिकारी को सौंपे हुए माने जाएंगे और मुख्य कार्यपालक अधिकारी उसके परिचालनों को बंद करने के प्रयोजन के लिए सभी शक्तियों का उसी प्रकार प्रयोग करेगा मानो कि वे अन्तरक बैंक द्वारा प्रयोग की गई हों। मुख्य कार्यपालक अधिकारी इस प्रकार के अन्तरण को प्रभावी बनाने के प्रयोजन के लिए ऐसे सभी कदम उठाएगा जो भारत के बाहर उस देश के कानून द्वारा अपेक्षित हों और उसके संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी या तो स्वयं अथवा उसके द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से अंतरक बैंक की किसी भी आस्ति की वसूली करेगा अथवा उसकी दायित्वों का उन्मोचन करेगा और उसके शुद्ध आगामों को अन्तरिती बैंक को अंतरित करेगा।

#### (4) अन्तरक बैंक की बहियों को बन्द करना और तुलनपत्र को तैयार करना:—

- (i) अंतरक बैंक की बहियाँ को बंद किया जाएगा और 8 मार्च, 1999 को कारबार या उसके पश्चात् कारबार के बंद होने पर, प्रथम दृष्टांत रूप में उसका तुलन किया जाएगा और तुलन पत्र तैयार किया जाएगा तथा तुलन पत्र, चार्टर्ड एकाउन्टेंट या इस प्रयोजन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुमोदित या नामित चार्टर्ड एकाउन्टेंट की फर्म द्वारा संपरिक्षित और प्रमाणित किया जाएगा।
- (ii) पूर्वगामी पैरा के उपबंधों के अनुसार तैयार किए गए अंतरक बैंक के तुलन पत्र की एक प्रति अंतरक बैंक के तुलन पत्र प्राप्त होने के पश्चात् यथाशीघ्र अंतरक बैंक द्वारा कम्पनी रजिस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और यथाशीघ्र इसके प्राप्त होने के पश्चात् अंतरक बैंक के तुलन पत्र या लाभ और हानि खातों अथवा उसके सदस्यों को प्रस्तुत करने अथवा कम्पनी रजिस्ट्रार के पास फाइल करने अथवा

तुलन पत्र और खातों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए वार्षिक साधारण अधिवेशन करने अथवा कम्पनी अधिनियम 1956 (1956 का 1) की धारा 159 के अनुसार विहित प्रयोजन का अनुपालन करने की अपेक्षा नहीं रहेगी और इसके पश्चात् उक्त अधिनियम की धारा 285 द्वारा तथा अपेक्षित अंतरक बैंक के निदेशक मंडल की बैठक की आवश्यकता नहीं रहेगी।

5. आस्तियों का मूल्यांकन और दायित्वों का अवधारण—अन्तरिती बैंक अंतरण बैंक के परामर्श से संपत्ति और आस्तियों का मूल्यांकन करेगा और उसकी दायित्वों का आकलन निम्नलिखित उपबंधों के अनुसार करेगा, अर्थात्,—

- (1) (क) सरकारी प्रतिभूतियों से भिन्न अन्य निवेश का विहित तारीख से ठीक पहले विद्यमान बाजार दरों पर मूल्यांकन किया जाएगा।
- (ख) (i) बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 1) की धारा 24 के प्रयोजन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी अधिराजपत्र में दिए गए सिद्धांतों के अनुसार सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन विहित तारीख से ठीक पहले दिन की स्थिति में किया जाएगा।
- (ii) केन्द्रीय सरकार की ऐसी प्रतिभूतियां जैसे डाकघर प्रमाण पत्र, खजाना जमा बचत प्रमाण पत्रों और केन्द्रीय सरकार की अन्य बचत योजना के अधीन जारी कोई अन्य प्रतिभूति का प्रमाण पत्र का, मूल्यांकन उनके अंकित मूल्य या उस तारीख को नकदीकरण मूल्य पर, इसमें से जो भी उच्चतर हो, किया जाएगा।
- (iii) जहां अर्भीदारी, उन्मूलन बंधपत्र जैसी किसी सरकारी प्रतिभूति अथवा इस प्रकार की कोई अन्य प्रतिभूति को जिसकी बायत मूलधन किस्तों में संदेय है, बाजार मूल्य का अभिविनिश्चित नहीं किया जाता है या कोई कारण जिसे उसके उचित मूल्य को प्रभावित न करने वाला माना जाता है या जैसा अन्यथा समुचित हो तो उस प्रतिभूति का मूल्यांकन मूलधन की किस्तों और संदत्त शेष व्याज, इसकी संदेय किस्तों की अवधि को ध्यान में रखते हुए उचित समझी गयी रकम पर किया जाएगा। इस बात का भी ध्यान रखा जाएगा कि जिस प्रकार की प्रतिभूति नहीं है उस सरकार द्वारा जारी की गई उरी अवधि के अथवा लगभग उसी अवधि की किसी प्रतिभूति की परिपक्वता पर इन पर प्राप्य रकम तथा अन्य सुसंगत बातों का भी ध्यान रखा जाएगा।
- (ग) जहां किसी प्रतिभूति, अंश डिबेंचर, बन्धपत्र या अन्य निवेश का बाजार मूल्य अन्य सामान्य कारकों द्वारा प्रभावित होने वाले कारण पर विचार किया जाता है वहां किसी न्यायोचित अवधि पर इसके औसत बाजार मूल्य के आधार पर निवेश का मूल्यांकन किया जाएगा।
- (घ) जहां किसी प्रतिभूति, शेयर (अंश), डिबेंचर, बंधपत्र या कोई अन्य निवेश, अभिविनिश्चित नहीं की जा सकती हैं, वहां केवल ऐसे मूल्य को, यदि कोई हो, गणना में लिया जाएगा जो जारी कर्ता समुधम की वित्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान इसके द्वारा संदत्त लाभांश और अन्य सुसंगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उचित समझी गई है।
- (ङ) परिसर और सभी अन्य म्थावर संपत्तियां और दावों की वृष्टि में अर्जित आस्तियां उनके बाजार मूल्य पर मूल्यांकित की जाएंगी।
- (च) फर्नीचर, और फिक्सचर, स्टॉक में लेखन सामग्री और अन्य आस्तियां, यदि कोई हों प्रतियों के अनुसार लिखे गए मूल्य या उचित समझे जा सकने वाले वसूलीय मूल्य पर, मूल्यांकित की जाएंगी।
- (छ) अग्रिम, जिसमें विक्रय किए गए बिल और प्रदत्त, नही ऋण तथा विविध आस्तियों की संवीक्षा अन्तरिती बैंक और प्रतिभूतियों द्वारा की जाएगी, जिसमें इसके लिए अन्तरिती बैंक द्वारा परीक्षित सत्यापित की जाने वाली वांछित गारंटियां भी हैं। नेत्यश्चात् अधिमों का, उनके भाग सहित, दो प्रयोगों में वर्गीकृत किया जाएगा अर्थात् “ऐसे अग्रिम में पर्याप्त और तत्पर वसूली योग्य समझे गए हैं” तथा “तत्पर वसूली योग्य न समझे गए और या ऐसे अग्रिम जिनकी वसूली इच्छित या संदेहास्पद है।”

2. अन्तरिती बैंक विहित तारीख को “आस्ति खाता” नाम से एक खाता खोलेगा। इस खण्ड के अनुसार तत्पर वसूलीय आस्ति के रूप में अवधारित आस्ति के मूल्य का प्रतिनिधित्व करने वाली कुल रकम आस्ति खाता में जमा की जाएगी।

- (3) (i) जहां विहित तारीख को किसी आस्ति का मूल्यांक अवधारित नहीं किया जा सकता है, वहां यह भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन की पश्चात्तवर्ती तारीख को भागतः या पूर्णतः वसूलीय आस्ति के रूप में समझी जाएगी।

- (ii) आस्ति के मूल्यांकन और/या किसी अग्रिम और/या दायित्व के अवधारण के बारे में अन्तरिती बैंक और अंतरक बैंक में किसी असहमति की दशा में यह मामला भारतीय रिजर्व बैंक को उसकी राय के लिए निर्दिष्ट किया जाएगा :

परन्तु यह कि जब तक कि कोई इस तरह की राय प्राप्त नहीं हो जाती है, अन्तरिती बैंक द्वारा मद या उसके भाग के मूल्यांकन को इस स्कीम के प्रयोजन के लिए अन्तिम रूप से अपनाया जाएगा।

(II) यदि भारतीय रिजर्व बैंक के लिए ऐसा करना आवश्यक हो तो वह ऐसी मदों के मूल्यांकन के संबंध में तकनीकी सलाह जैसी वह उचित समझे, लेने में सक्षम होगा, जो वह आस्तियों की किसी ऐसी मद के मूल्यांकन या दायित्व की किसी ऐसी मद के अवधारण के संबंध में उचित समझे और ऐसी सलाह प्राप्त करने की लागत अन्तरक बैंक की आस्तियों से पूर्ण रूप में संदेय होगी।

4. इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए दायित्व में ऐसे सभी आकस्मिक दायित्व सम्मिलित होंगे जिन्हें अन्तरिती बैंक विहित तारीख को या उसके पश्चात् अपने संसाधनों से पूरा करने के लिए युक्तियुक्त रूप से अपेक्षित करे।

5. पूर्वगामी उपबंधों के अनुसार आस्ति का और दायित्वों का अवधारण बैंक और इसके सदस्य और उसके लेनदारों दोनों पर अन्तर्द्वार होगा।

## अध्याय 3

## लेनदारों और निक्षेपकर्ताओं को संदाय

6. अंतरक बैंक के दायित्व का उन्मोचन (1) अंतरक बैंक की सम्पत्ति और आस्तियों के अन्तरिती बैंक को अन्तरण करने के प्रतिफल स्वरूप अन्तरण बैंक अन्तरिती बैंक को इसमें और निम्नलिखित खण्डों में वर्णित सीमा तक दायित्वों का उन्मोचन करेगा, अर्थात् :—

(क) अंतरण बैंक के किसी कर्मचारी द्वारा उस बैंक में कर्मचारीवृन्द प्रतिभूति के रूप में जमा राशि को विहित तारीख तक उस पर उपगत पूर्ण ब्याज यदि कोई हो, का संदाय किया जाएगा या उसका उपबंध किया जाएगा;

स्पष्टीकरण : इस उप पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तारीख तक निक्षिप्त धन पर संदेय ब्याज को सम्बद्ध निक्षेप का भार माना जाएगा;

(ख) अंतरक बैंक के प्रत्येक बचत बैंक खाते या चालू खाते या कोई अन्य जमा खाते में जिसमें सावधि निक्षेप, रोकड़ प्रमाणपत्र, मासिक निक्षेप, मांग पर या अल्प सूचना पर संदेय निक्षेप या कोई अन्य निक्षेप, चाहे वह किसी भी नाम से ज्ञात हो, अंतरिती बैंक, इस पैरा के खण्ड (क) के अन्तर्गत न आने वाला प्रत्येक अन्य खाता विहित तारीख को, अपने धारक(कों) के नाम तत्समान और वैसा ही खाता खोलेगा और उसमें पूरी राशि का जिसमें इस स्कीम के अधीन उस पर संदेय ब्याज सीमा तक ब्याज सहित जमा करेगा :

परन्तु यह कि अन्तरिती बैंक किसी विशिष्ट खाते में की गई प्रविष्टि की शुद्धता के बारे में युक्तियुक्त शंका करता है तो रिजर्व बैंक के अनुमोदन से उस खाते में किए जाने वाले जमा को विहित तारीख से तीन मास से अनधिक अवधि के लिए रोक सकेगा और इस अवधि के भीतर अन्तरिती बैंक ऐसे खाते में कुछ अतिशेष को अभिनिश्चित करेगा।

(2) पैरा 5 के पैरा (4) के अधीन अवधारित अन्तरक बैंक के प्रत्येक अन्य दायित्वों की बाबत अंतरिती बैंक, लेनदार को ऐसे दायित्व की राशि का जब भी देय हो संदाय करेगा।

(3) किसी ब्याज धारी जमा खाता की बाबत अंतरिती बैंक विहित तारीख तक भारतीय रिजर्व बैंक के निदेशानुसार लागू दर ब्याज का संदाय करेगा। किसी चालू खाते या किसी गैर ब्याजधारी अन्य खाते की बाबत खाताधारक को कोई ब्याज संदेय नहीं होगा। 9 मार्च, 1999 से विहित तारीख की अवधि के दौरान कोई भी खाता धारक अपने खाते से किसी जमा या अन्य धन के असंदाय पर प्रतिकर का दावा करने का हकदार नहीं होगा।

(4) किसी अभिव्यक्त या विवक्षित संविदा में किसी बात के प्रतिकूल होते हुए भी अंतरिती बैंक में खोले गए और स्कीम के उपबंधों के अनुसार जमा किए गए खाते में केवल ऐसी दर से जो अंतरिती बैंक ऐसे खातों के लिए अपने जमाकर्ताओं को सामान्यतया अनुज्ञात करता है विहित तारीख से ब्याज का संदाय किया जाएगा।

(5) आस्ति खाता में जमा अतिशेष को इस खण्ड के अधीन दायित्व की पूर्ति के लिए अपेक्षित सीमा तक विनियोजित किया जाएगा। यदि आस्ति खाते में अतिशेष पर्याप्त नहीं है तो उस कम राशि को, अंतरिती बैंक द्वारा खर्च किया गया समझा जाएगा, और उनको उस संभव सीमा तक वसूल किया जाएगा जो स्कीम के पैरा 7 के उप पैरा (2) के खण्ड (ड) में उपबंधित है।

## अध्याय 4

## 7. अंतरक बैंक के अधिकार और दायित्व :—

(1) इस स्कीम के प्रारंभ पर, बैंक की समादत्त पूंजी और आरक्षित राशि को डूबे हुए और संदेहस्पद ऋणों और बैंक की अन्य आस्तियों के अवक्षयन के लिए उपबंध समझा जाएगा।

(2) अंतरक बैंक के प्रत्येक शेयर की बाबत ऐसी राशि जो नीचे, खण्ड (ख) के अनुसरण में अंतरिती बैंक द्वारा विहित तारीख के ठीक पूर्व और या मांग पर खाते में संदत्त राशि पर, प्रत्येक शेयरधारक द्वारा या उसकी (उनकी) ओर से शेयर पूंजी में अनादत्त समझी गई थी, संग्रहण खाता समझा जाएगा और उसे अंतरिती बैंक की लेखा बहियों में उस रूप में प्रविष्टि किया जाएगा और उसका खाते से निम्नलिखित ढंग से भुगतान किया जाएगा अर्थात् :—

(क) अंतरिती बैंक प्रथमतः ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को, जो विहित तारीख को, अंतरक बैंक के आस्थगित शेयर के धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या वह इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत) होने के लिए पात्र रहा है। ऐसे तारीख से या तारीखों से जो विहित की जाएं, तीन मास की अवधि के भीतर या शेयर या शेयरों की बाबत उसके द्वारा असंदत्त बकाया न मांगी गई राशि या और बकाया मांगी गई राशि का यदि कोई हो, संदाय करने के लिए कहेगा और उसके पश्चात् यदि वह आवश्यक पाया जाता है तो ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को, जो विहित तारीख को अंतरक बैंक के किसी साधारण शेयर के धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या इस रजिस्ट्रीकृत होने के लिए पात्र रहा है) ऐसी तारीख से या तारीखों से तीन मास की अवधि के भीतर ऐसे शेयर या शेयरों या मांगे गए अतिशेष यदि कोई हो, की बाबत उसके द्वारा असंदत्त अतिशेष का संदाय करने के लिए कहा जाएगा;

(ख) अन्तरिती बैंक मांग के प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त कदम उठाएगा और ऊपर खंड (क) की देय राशियों का, व्यक्तिकरण की अवधि के लिए उस पर छह प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से व्याज सहित संदाय कराएगा।

(ग) अन्तरिती बैंक अग्रिमों, क्रय किए गए और भुनाए गए बिलों बही ऋणों और अन्यान्य ऋणों और अन्य आस्तियों की बाबत जिन्हें तुरंत वसूल न किए जा सकने वाले और/या वसूली के लिए डूबे तथा संदेहास्पद अग्रिम समझा गया है या जिन्हें विहित तारीख के पश्चात् पूर्णतः या भागतः वसूल किया जा सकता है, मांग की प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, सभी उपलब्ध कदम उठाएगा और उसका संदाय कराएगा।

(घ) अन्तरिती बैंक मांग के प्रत्येक मामलों की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, इसके अतिरिक्त सभी उपलब्ध कदम उठाएगा और कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 10) की धारा 45ठ और धारा 543 के साथ पठित धारा 45ज के अधीन अन्तरक बैंक के किसी संप्रवर्तक, निदेशक, प्रबंधक या अन्य अधिकारी के विरुद्ध उच्च न्यायालय द्वारा नुकसानी के रूप में अधिनिर्णीत राशि, यदि कोई हो, का भुगतान कराएगा।

(ङ) अन्तरिती बैंक प्रथमतः खण्ड (ख), (ग) और (घ) में वर्णित मदों के कारण प्रभावित हुईं वसूली को, ऐसी रकम की वसूली के लिए उपगत व्यय के लिए और तत्पश्चात् पैरा 6 के उप पैरा (5) में निर्दिष्ट कमी के लिए विनियोजित कर सकेगी यदि ऐसे विनियोजन के पश्चात् कोई अधिशेष बचता है तो, अन्तरिती बैंक किसी आकस्मिक दायित्व की बाबत रिजर्व बैंक के अनुमोदन से किसी दायित्व वाहे आकस्मिक हो या अत्यांतिक या उसका ऊपर पैरा 4 के अनुसार निर्धारण किया गया हो या नहीं और चाहे उसका विहित तारीख के पश्चात् उद्भूत हो, आगे, या पता चला हो अधिशेष का संदाय करेगा।

(च) यदि ऊपर खण्ड (ङ) के अनुसार विनियोजन के पश्चात् कोई अधिशेष बचता है तो, अन्तरिती बैंक, नीचे विनिर्दिष्ट प्रकार से तथा सीमा तक अन्तरक बैंक के पूर्व शेयर धारकों के खातों में देय रकम यदि कोई हो, उपलब्ध रकम में से यथानुपात संदाय करेगा :—

- (i) प्रथमतः अन्तरक बैंक के पूर्व अधिमान शेयर धारकों के खातों में देय रकम यदि कोई हो सभी खातों में पूर्ण संदाय किए जाने तक संदाय करेगा।
- (ii) द्वितीयतः, अन्तरक बैंक के पूर्व साधारण शेयर धारकों के खातों में देय रकम, यदि कोई हो सभी खातों में पूर्ण संदाय किए जाने तक संदाय करेगा।
- (iii) तृतीयतः, अन्तरक बैंक के पूर्व आस्थगित शेयर धारकों के खातों में देय रकम यदि कोई हो, सभी खातों में पूर्ण संदाय किए जाने तक संदाय करेगा, और
- (iv) ऊपर उपखण्ड (I) (II) और (III) में वर्णित सारी रकमों का संदाय पूर्ण रूप से कर दिए जाने पर, अन्तरिती बैंक के हाथों में बचे हुए अधिशेषों को यदि कोई हो, अन्तरक बैंक के पूर्व साधारण शेयर धारकों के बीच यथानुपात वितरित किया जाएगा :

परन्तु यदि कोई प्रश्न उठता है कि ऊपर के किसी खण्ड में वर्णित खातों में क्या कोई राशि शोध्य है तो इसे निनिश्चय के लिए भारतीय रिजर्व बैंक को निर्देशित किया जाएगा।

(छ) इस पैरा में निर्दिष्ट संग्रहण खातों को शोध्य रकम, इस योजना में उपबंधित की गई सीमा तक केवल अन्तरिती बैंक का दायित्व समझी जाएगी।

(ज) इस प्रयोजन के लिए विहित तारीख से बारह वर्ष की अवधि की समाप्ति पर या ऐसी पूर्वतर अवधि जिसे केन्द्रीय सरकार भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श करने के पश्चात् विनिर्दिष्ट करे, इस उप पैरा खण्ड (ग) में निर्दिष्ट कोई भी मद जिसकी उस तारीख तक वसूली नहीं की गई है भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से अन्तरिती बैंक द्वारा मूल्य निकाला जाएगा और अन्तरिती बैंक पैरा 5 के उप पैरा (4) में निर्दिष्ट कमी को पूरा करने के लिए, आवश्यक पहले किसी ऐसी रकम से कटौती करने के पश्चात् उस मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए किसी रकम या रकमों के वितरण को अवधारित करेगा जिसका इस पैरा के उप पैरा (2) के खण्ड (च) में उपबंधित क्रम में और रीति से उस तारीख तक समाधान हुए बिना रहा हो, अवधारित की गई किसी रकम/रकमों का वितरण करेगा।

## अध्याय 5

### अन्तरक बैंक के कर्मचारियों के अधिकार और बाध्यताएं

#### 8. कर्मचारियों की सेवा का बने रहना :—

- (1) अन्तरक बैंक के सभी कर्मचारी सेवा में बने रहेंगे और अन्तरिती बैंक में उन्हीं पारिश्रमिक तथा सेवा की उन्हीं निबंधनों और शर्तों पर नियुक्त किए गए समझे जाएंगे जो 8 मार्च, 1999 को कारबार बंद होने के ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों के लिए लागू थी।

परन्तु अन्तरक बैंक के उन कर्मचारियों जिन्होंने केन्द्रीय सरकार के द्वारा मंजूर की गई योजना के ठीक पश्चात् की तारीख के एक मास की समाप्ति के पूर्व किसी भी समय अन्तरिती बैंक या अन्तरक बैंक को लिखित में दी गई सूचना के द्वारा अन्तरिती बैंक के कर्मचारी न बनने के आशय की सूचना दी

गई हो, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) के उपबंधों के अधीन और ऐसा पैसा। उपदान, भविष्य निधि और अन्य सेवा निवृत्ति फायदा (फायदे) जो 8 मार्च, 1999 का कारवार बंद होने के ठीक पहले यथा प्रवृत्त थे, अन्तरिती बैंक के प्राधिकार के नियमों के अन्तर्गत ऐसे प्रतिकर के जो साधारणतया अनुज्ञेय हों, संदाय के लिए हकदार होंगे।

(2) अन्तरिती बैंक अन्तरक बैंक के उन कर्मचारियों की बाबत जिन्हें अन्तरिती बैंक के कर्मचारियों के रूप में नियुक्ति किया गया समझा गया है, अन्तरिती बैंक की सेवा में रहकर उनकी छुट्टी किए जाने की दशा में उनके लिए छुट्टी प्रतिकर का दायित्व अन्तरिती बैंक द्वारा इस आधार पर किया गया समझा जाएगा कि उनकी सेवाएं निरंतर रही हों और अन्तरक बैंक को उनके स्थानान्तरण द्वारा अवरोधित न की गई हो।

(3) अन्तरिती बैंक उस तारीख से, जिनको स्कीम को मंजूरी दी गई है, तीन वर्ष की अवधि की अवधि की समाप्ति पर, उप पैरा (1) के अधीन अन्तरिती बैंक में जिनकी सेवाएं जारी हैं, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों को सेवा के उन्हीं पारिश्रमिक और उन्हीं निबंधनों एवं शर्तों के जो अन्तरिती बैंक के तत्समान बैंक और प्रास्थिति के कर्मचारियों पर लागू होते हैं, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों की अर्हताएं और अनुभव समाप्त समान होने को दशा में या अन्तरिती बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों को अर्हताएं एवं अनुभव के समतुल्य होने पर संदाय करेगा;

परन्तु इस संबंध में कोई संदेय या मतभेद उत्पन्न होता है कि क्या उक्त कर्मचारियों की अर्हता या अनुभव अन्तरिती बैंक के तत्समान बैंक या प्रास्थिति के अन्य कर्मचारियों की अर्हताएं और अनुभव समान हैं या उसके समतुल्य हैं या इस संबंध में अन्तरिती बैंक के वर्तमान में कर्मचारियों के वेतन का निर्धारण के लिए अपनाए जाने वाले विधानों की प्रक्रिया के संबंध में, संदेय और मतभेद भारतीय रिजर्व बैंक को निर्देशित किया जाएगा जिसका निर्णय अंतिम होगा।

(4) यथास्थिति अन्तरक बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भविष्य निधि और/या उपदान निधि के न्यासियों या प्रशासकों, अन्तरिती बैंक के लिए गठित कर्मचारी भविष्य निधि और/या उपदान निधि के न्यासियों का अन्तरक बैंक यथाशीघ्र निहित तारीख को या इसके पश्चात् या अन्यथा अन्तरिती बैंक के, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों के फायदे के लिए न्यास में रखे सभी धन और धानधान को अन्तरित करेगा।

परन्तु पश्चात् कथित ऐसे न्यासी विनिधान के मूल्य में किसी कमी या किसी कार्य की बाबत उपेक्षा या स्कीम के प्रारम्भ होने की तारीख से पहले किए गए व्यतिक्रम के लिए दायी नहीं होंगे।

## अध्याय 6

### प्रकीर्ण

#### 9. लेनदारों द्वारा मांग :

अन्तरक बैंक का कोई लेनदार अन्तरक बैंक के अन्तरिती बैंक के विरुद्ध कोई भाग करने के लिए या इन स्कीम द्वारा विहित मोम के सिवाय अन्तरक बैंक उसके किसी भी दायित्व की बाबत मांग करने का हकदार नहीं होगा।

10. केन्द्रीय सरकार रिजर्व बैंक, अन्तरिती बैंक या अन्तरक बैंक के विरुद्ध विधिक कार्यवाही :—इस स्कीम के अनुसरण में सद्भाव पूर्वक की गई किसी बात करने के आशयित किसी बात के लिए केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अन्तरिती बैंक या अन्तरक बैंक के विरुद्ध कोई वाद या अन्य विधिक कार्यवाही नहीं की जाएगी।

11. अन्तरक बैंक की शाखाओं का पुनर्गठन :—अन्तरिती बैंक अपनी सुविधानुसार अन्तरक बैंक की शाखाओं को एकीकृत करने और/या बंद करने या वर्तमान हानि उठाने वाली शाखाओं का स्थानान्तरण करने का विकल्प रखेगा। तथापि, पूर्वोक्त विकल्प का एक वर्ष की अवधि के भीतर भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से अन्तरिती बैंक द्वारा प्रयोग किया जाएगा।

12. विवरणियों के जानकारी का दिया जाना :—अन्तरिती बैंक इस स्कीम के क्रियान्वयन के संबंध में समय-समय पर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा यथा अपेक्षित ऐसी विवरणियों और सूचना को भारतीय रिजर्व बैंक को प्रस्तुत करेगा।

13. नोटिस को शामिल की रीति : अन्तरिती बैंक द्वारा दिए जाने वाले नोटिस या अन्य संसूचना को, यदि अन्तरक बैंक की किताबों/पहरी में लिखे गए पते पर संबोधित और जाने वाले को पूर्व संदत्त साधारण डाक द्वारा भेजा गया है तो सम्यक् रूप में तामिल किया गया या भेजा गया समझा जाएगा, जब तक कि अन्तरिती बैंक की बही में नया पता प्रविष्ट नहीं कर दिया जाता है और ऐसी नोटिस को इसके डाक में डालने के पश्चात् अड़तालीस घंटों की समाप्ति पर तामिल किया हुआ समझा जाएगा। कोई नोटिस या संसूचना जो साधारण हित की है, को एक या एक से अधिक दैनिक समाचार पत्रों में विज्ञापित किया जाएगा जो उस स्थान पर जहां अन्तरक बैंक अपना कारबार कर रहा था, परिचालन में हो।

[फा. सं. 17/9/97-बीओए(1)]

एम. दामोदरन, संयुक्त सचिव

**MINISTRY OF FINANCE**  
**(Department of Economic Affairs)**  
**(Banking Division)**  
**NOTIFICATION**

New Delhi, the 1st June, 1999

S.O. 406(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government has made, under sub-section (2) of that section an order of moratorium in respect of the Bareilly Corporation Bank Limited, Bareilly, Uttar Pradesh.

And whereas during the period of moratorium, the Reserve Bank of India, being satisfied that in public interest and in the interest of the depositors so to do, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 45 of the said Act had prepared a scheme for the amalgamation of the Bareilly Corporation Bank Limited with the Bank of Baroda;

And whereas the Reserve Bank of India, after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme, had forwarded it to the Central Government for sanction;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the following scheme on and subject to the terms and conditions hereafter mentioned.

## CHAPTER - I

## Preliminary

1. Short title and commencement:

(1) This scheme may be called the Bareilly Corporation Bank Limited, (Amalgamation with Bank of Baroda) Scheme, 1999.

(2) It shall come into force on such date as the Central Government may, by notification in the Official Gazette, specify.

2. Definitions: In this Scheme, unless the context otherwise requires, -

- (1) "Act" means the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949);
- (2) "Asset Account" means a notional account opened pursuant to sub-paragraph (2) of paragraph 5 of the Scheme for the purpose of ascertaining the surplus or shortfall after the adjustment from time to time of liabilities of the transferor bank as provided in the Scheme;
- (3) "Collection Account" means a notional account opened in accordance with paragraph 7 of the Scheme, for the purpose of ascertaining the amount, if any, available for distribution to the members of the transferor bank after adjustment of assets and liabilities;
- (4) "Prescribed date," means the date which the Central Government may specify under sub-paragraph (2) of paragraph 1.
- (5) "Scheme" means the Bareilly Corporation Bank Limited (Amalgamation with Bank of Baroda) Scheme, 1999;
- (6) "transferor bank" means the Bareilly Corporation Bank Limited, a banking company, having its registered office at BCB Bhawan, 126, Civil Lines, Bareilly, Uttar Pradesh;
- (7) "transferee bank" means the Bank of Baroda, a corresponding new bank constituted under section 3 of the Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertakings) Act, 1970 (5 of 1970);



- (8) Words and expressions used herein and not defined but defined in the Act have the meaning respectively assigned to them in the Act.

## CHAPTER - II

### Transfer of business, properties, assets and liabilities

#### 3. Transfer of assets and liabilities and general effect thereof –

- (1) As on and from the prescribed date all rights, powers, claims, demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers, stocks of stationary, other stocks, and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with banks, bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other, if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of the transferee bank; and on and from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee banks to the extent and in the matter provided hereinafter.
- (2) Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the

transferor bank, the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

- (3) If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending; the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall, subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.
  - (4) If according to the laws of any country outside India, the provisions of this Scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.
4. Closure of books of the transferor bank and preparation of balance sheet: -
- (1) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheet prepared in the first instance as at the close of business on the 8 March 1999 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheet shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

- (2) A copy of the balance sheet of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheet or profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of section 159 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956) and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by section 285 of that Act.

5. Valuation of assets and determination of liabilities: - The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely:-

(1)(a) Investments other than Government securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately proceeding the prescribed date.

(b) (i) the Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve bank of India for the purpose of section 24 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949);

(ii) the Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher;

(iii) where the market value of any Government security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the

security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors;

(c) where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.

(d) where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable, only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors;

(e) the premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value;

(f) the furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable;

(g) advances, including bills purchased and discounted, book debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and / or bad or doubtful of recovery".

(2) The transferee bank shall open on the prescribed date an account styled as "Asset Account". The aggregate amount representing the value of the assets determined as readily realisable assets in accordance with this clause shall be credited to the "Asset Account".

(3) (i) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date;

(ii) in the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and / or the classification of any advance and / or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, for its opinion;

Provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme;

(iii) it shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

(4) Liabilities for purposes of this Scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

(5) The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

### CHAPTER - III

#### Payment to creditors and depositors

6. Discharge of liability of the transferor bank: - (1) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely:-

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits, together with interest, if any, accrued thereon upto the prescribed date shall be paid or provided for in full.

**Explanation:** - For the purpose of this sub-paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit;

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit account including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a) of this paragraph the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto full amount including interest to the extent payable under this scheme.

Provided that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account, it may with the approval of the Reserve Bank of India withhold the credit to be made in that account for a period not exceeding three months from the prescribed date within which the transferee bank shall ascertain the correct balance in such account.

(2) In respect of every other liability of the transferor bank determined under sub-paragraph (4) of paragraph 5, the transferee bank shall pay to the creditor the amount of such liability as and when they fall due.

(3) In respect of any interest bearing deposit accounts, the transferee bank shall pay interest at the rate applicable in accordance with the Reserve Bank of India directives till the prescribed date. In respect of balances in any current account or any other non-interest bearing account, no interest shall be payable to the account holder. No account holder shall be entitled to claim any compensation for the non-payment of any deposit or other money from his account during the period from the 9th March, 1999 till the prescribed date.

(4) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest from the prescribed date shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank and credited in accordance with the provisions of the scheme only at such rates as the transferee bank normally allows to its own depositors for such accounts.

(5) The credit balance in the "Asset Account" shall be appropriated to the extent required to meet the liability under this clause. If the balance in the "Asset Account" is not sufficient, so much of the short-fall shall be treated as amount spent by the transferee bank and to the extent possible, be recovered by it as provided in clause (e) of sub-paragraph (2) of paragraph 7 of the Scheme.

#### CHAPTER - IV

##### 7. Rights and liabilities of the members of the transferor bank.

(1) On the commencement of this Scheme, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank.

(2) In respect of every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (b) below shall be treated as a "Collection Account" and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely : -

(a) The transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any, and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;

(b) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due

under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default;

(c) the transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment.

(d) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under section 45 L of the Act, read with section 45 H thereof and also with section 543 of the Companies Act, 1956 (10 of 1956).

(e) the transferee bank may, appropriate the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (b), (c) and (d) above, in the first instance towards expenses incurred for the recovery of such amount and thereafter towards the shortfall referred to in sub-paragraph (5) of paragraph 6. If any surplus remains after such appropriation, the transferee bank shall make payment or provision in respect of any contingent liability as also with the prior approval of the Reserve Bank of India, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph 4 above and has arisen or been discovered after the prescribed date.

(f) If any surplus remains after the appropriation in terms of clause (e) above, the transferee bank shall, make payments pro-rata from amount if any available towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below : -

(i) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;



(ii) in the second place, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;

(iii) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts have been made; and

(iv) after all the amounts mentioned in sub-clauses (I), (ii) and (iii) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank :

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India for its decision;

(g) the amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this Scheme.

(h) on the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any items referred to in clauses (c) of this sub-paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any such amount necessary for meeting the shortfall referred to in sub-paragraph (4) of paragraph 5 which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clause (f) of sub-paragraph (2) of this paragraph.

#### CHAPTER - V

#### Rights and obligations of the Employees of Transferor Bank

#### 8. Continuation of service of the employees

1637/91/19-2

(1) All the employees of transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed in the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service, as were applicable to such employees immediately before the close of business on the 8th March, 1999 :

Provided that the employees of the transferor bank, who have by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which the Scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947) and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank as in force immediately before the close of business on the 8th March, 1999.

(2) The transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank, be deemed also to have taken over the liability for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their services have been continuous and have not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(3) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which the Scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank whose services are continued in the transferee bank under sub-paragraph (1), the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank :

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding bank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales

of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(4) The trustees or administrators of any provident fund and/or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees' provident fund and/or gratuity fund constituted for the transferee bank or otherwise as the transferee bank may direct, all the moneys and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the date of commencement of the scheme.

#### CHAPTER - VI

##### Miscellaneous

9. Demand by Creditors: No creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this Scheme.

10. Legal proceedings against Central Government, Reserve Bank of India, transferee bank or transferor bank: No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee bank or the transferor bank for any thing which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this Scheme.

11. Reorganisation of branches of transferor bank: The transferee bank shall have the option of integrating branches of transferor bank according to its convenience and/or close down or shift the existing loss making branches of the transferor bank. The aforesaid option will, however, be exercised by the transferee bank with the prior approval of Reserve Bank of India within a period of one year.

12. Furnishing statements and information: The transferee bank shall submit to the reserve Bank of India such statements and information as may be required

by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this Scheme.

13. Manner of service of notice: Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication, which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.

[F. No. 17/9/97-BOA(i)]

M. DAMODARAN, Jt. Secy.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 1 जून, 1999

का.आ. 407 (अ).—केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के अनुसरण में बरेली कारपोरेशन बैंक लिमिटेड, बरेली, उत्तर प्रदेश का बैंक आफ बड़ौदा में समामेलन के लिए स्कीम के संबंध में, जो उक्त उपधारा के उपबन्धों के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर की गई है, तारीख 3 जून को विहित तारीख के रूप में विनिर्दिष्ट करती है।

[फा. सं. 17/9/97-बी.ओ.ए.(ii)]

एम. दामोदरन, संयुक्त सचिव

#### NOTIFICATION

New Delhi, the 1st June, 1999

S.O. 407 (E).—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the 3rd June 1999 as the prescribed date in relation to the Scheme for the amalgamation of the Bareilly Corporation Bank Limited (BCBL), Bareilly, Uttar Pradesh with Bank of Baroda which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section.

[F. No. 17/9/97-BOA(ii)]

M. DAMODARAN, Jt. Secy.